पाठ-9

भाग्य बड़ा या साहस ?

- संकलित

आइए सीखें

◆ कहानी विधा का ज्ञान ◆ छोटे से छोटा कार्य भी पूर्ण निष्ठा व सम्पूर्ण कुशलता से करना ◆ विनम्र व्यवहार करना ◆ आगत शब्दों एवं कारक चिह्नों का ज्ञान।

एक बार की बात है—भाग्य और साहस में अचानक झगड़ा उठ खड़ा हुआ।

भाग्य ने कहा—''सबसे बड़ा मैं हूँ। मैं जब जिसे चाहूँ राजा से रंक बना दूँ और रंक से राजा बना दूँ।''

साहस ने कहा—''छोड़ो-छोड़ो, सबसे बड़ा तो मैं हूँ। जिस आदमी में साहस न हो, वह कुछ कर ही नहीं सकता। जिसमें साहस हो, वही सुखी होता है। इसीलिए मैं तुमसे बड़ा हूँ।''

''चलो-चलो''! भाग्य ने मुँह बिदकाकर कहा—''कोई कितना ही साहसी क्यों न हो, यदि उसके भाग्य में सुख नहीं है तो उसे साहस के बल पर सुख कदापि नहीं मिल सकता।''

''किसी के भाग्य में कितना भी सुख लिखा हो, लेकिन यदि वह साहसी नहीं है तो वह कभी सुखी नहीं हो सकता।'' उदाहरण देते हुए साहस ने कहा, ''मान लो किसी के भाग्य में लिखा है कि उसे जंगल में अपार धन मिलेगा। अब अगर उस आदमी में साहस होगा, तभी तो वह जंगल में जाएगा। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि साहस भाग्य से बड़ा है...।''

होते-होते यह बहस लंबी होती चली गई। भाग्य अपने को तरह-तरह की मिसालें देकर बड़ा बताता और साहस उसकी दलीलों को काटकर अपने बड़ा होने की बात करता।

लेकिन इस तरह एक-दूसरे के कहने भर से तो कोई बड़ा हो नहीं जाता?

आखिर दोनों के बीच यही तय हुआ कि इस झगड़े को निपटाने के लिए किसी तीसरे से इसका फैसला कराया जाए; जिसे वह बड़ा कह दे, उसी को बड़ा मान लिया जाए।

''हाँ, यह ठीक है,'' भाग्य ने कहा, ''चलो, हम किसी आदमी से ही इस बात का फैसला कराएँ।''

किससे कराया जाए? यह दोनों के लिए ही अब समस्या थी।

शिक्षण संकेत

◆ भाग्य और साहस पर चर्चा द्वारा वातावरण निर्माण करें ◆ कहानी का उचित हाव-भाव एवं विराम-चिह्नों का ध्यान रखते हुए वाचन करें ◆ संयुक्त वर्ण वाले तथा आगत शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।

दोनों कुछ देर सोचते रहे।

बड़ी देर के बाद साहस ने ही सुझाया, ''पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य बड़े ही प्रतापी राजा माने जाते हैं। हम लोगों को उन्हीं के पास चलना चाहिए।''

''चलो, यह भी ठीक है।'' भाग्य ने कहा, ''राजा विक्रमादित्य वास्तव में सत्यवादी हैं, न्यायप्रिय भी हैं। वह जो फैसला करेंगे, ठीक ही करेंगे।''

और दोनों पहुँच गए राजा विक्रमादित्य के दरबार में।

राजा विक्रमादित्य सिंहासन पर बैठे थे। राज-सभा में सभी आसनों पर बड़े-बड़े पंडित-ज्ञानी मौजूद थे। धर्म-चर्चा चल रही थी। कोई वेदों की बातें कर रहा था तो कोई पुराणों की। सोने के सिंहासन पर बैठे राजा विक्रमादित्य ध्यान से सबकी बातें सुन रहे थे।

उसी समय पहुँच गए भाग्य और साहस।

राजा विक्रमादित्य ने उठकर बड़े आदर से दोनों का स्वागत किया। उनकी आरती उतारी, स्तुति की। उनके लिए अपने सिंहासन से भी ऊँचे दो जड़ाऊ सिंहासन मँगवाए। भाग्य और साहस जब सिंहासनों पर बैठ गए तब राजा विक्रमादित्य ने हाथ जोड़कर कहा, ''आप लोगों के दर्शन पाकर मैं सचमुच धन्य हो गया। कहिए, आप दोनों की मैं क्या सेवा करूँ?''

भाग्य ने प्रसन्न होकर कहा, ''महाराज, आपके स्वागत-सत्कार से हम बड़े प्रसन्न हैं। आप केवल एक बात का फैसला कर दें, बस...।''

''आज्ञा कीजिए।''

''आप हमें यह बताने का कष्ट करें कि हममें से कौन बड़ा है?''

''हाँ महाराज!'' साहस ने कहा, ''डरना मत। जो उचित हो, वही कहना।''

राजा विक्रमादित्य ने दरबार में बैठे ज्ञानी-पंडितों की ओर देखा।

पंडितों ने तुरंत राजा का मतलब समझ लिया। वे वेद, पुराण और दूसरे बड़े-बड़े ग्रंथ खोल-खोलकर देखने लगे, लेकिन एक-एक पन्ना देख डालने पर भी वे लोग यह पता नहीं लगा पाए कि भाग्य बड़ा है या साहस।

अब तो राजा विक्रमादित्य बड़े चक्कर में पड़ गए। आखिर उनसे कहें तो क्या कहें? भाग्य से उनके पास सब कुछ था—राज-पाट, हाथी-घोड़े, सेना-सिपाही और यश-कीर्ति। यह सब कुछ भाग्य के कारण ही तो था, लेकिन राजा विक्रमादित्य आखिर राजा थे, वीर थे। एक बार तो यमराज से भी जूझ पड़ने का उनमें साहस था। फिर वह साहस को कैसे छोटा कहें?

उधर भाग्य था कि जल्दी मचाए हुए था, 'बोलो, राजा! हमारा फैसला कर दो, फिर हम चलें।'

''हाँ, राजा!'' साहस ने भी हौसला बढ़ाते हुए कहा, ''डरते क्यों हो? जो बड़ा हो उसे बड़ा कह दो और जो छोटा हो उसे छोटा कह दो। बोलो, जल्दी बोलो!''

राजा विक्रमादित्य ने हाथ जोड़कर कहा, ''आप दोनों के झगड़े का मैं फैसला तो कर सकता हूँ, पर मुझे सोचने के लिए थोड़ा-सा समय चाहिए।''

''कितना समय?'' भाग्य और साहस ने एक-साथ पूछा।

राजा ने सोचकर कहा, ''मुझे छः महीनों का समय दीजिए। ठीक छः महीने बाद आप लोग आ जाइए, तब मैं अपना फैसला सुना दूँगा।''

''अच्छी बात है। अब हम छः महीने के बाद ही आएँगे, पर उस दिन भी हमें टाल मत देना।''

''नहीं-नहीं, उस दिन जरूर फैसला सुना दूँगा।''

भाग्य और साहस उठकर चले गए।

राजा विक्रमादित्य सोचने लगे—यहाँ राजमहल में तो हर प्रकार का मुझे सुख है। किसी भी चीज़ की इच्छा करते ही तुरंत मिल जाती है। इसी तरह रक्षा करने के लिए हजारों सिपाही-सेनापति हैं। यहाँ रहकर न तो भाग्य की परीक्षा हो पाएगी और न साहस की। इसलिए कुछ दिन इस नगर से बाहर निकलकर मुझे घूमना चाहिए—तभी पता चल पाएगा कि भाग्य बड़ा है या साहस!

बस, उधर भाग्य और साहस दरबार से निकले और इधर राजा विक्रमादित्य भी राज-पाट मंत्रियों को सौंपकर अकेले ही निकल पड़े—यह सोचते हुए कि देखें, अब भाग्य साथ देता है या साहस!

चलते-चलते राजा विक्रमादित्य अपने राज्य से बाहर निकल गए और दूसरे राजा के नगर में जा पहुँचे। वहाँ वह एक सेठ के दरवाज़े पर पहुँचकर अचानक रुक गए। सेठ भी वहीं खड़ा था। उसने देखा कि एक अच्छा-भला तंदुरुस्त आदमी अचानक उसके दरवाज़े पर आकर खड़ा हो गया है उसके चेहरे पर तेज दमक रहा है और कमर में तलवार बँधी हुई है। लगता तो ऐसे है जैसे कहीं का राजा हो। पराए देश का सेठ भला राजा विक्रमादित्य

को कैसे पहचानता? सो उसने आगे बढ़कर पूछा, ''क्या बात है, भाई? यहाँ कैसे खड़े हो?''

राजा विक्रमादित्य ने कहा, ''मैं नौकरी करना चाहता हूँ। आपके पहनावे से मुझे ऐसा लगा जैसे आप यहाँ के बहुत बड़े सेठ हैं, मुझे भी कोई नौकरी दे सकते हैं।''

''नौकरी?'' सेठ ने ताज्जुब से पूछा, ''भाई, तुम तो खुद ही किसी राजा-महाराजा से कम नहीं लगते हो, भला तुम क्या नौकरी करोगे? कहाँ से आ रहे हो?''

''राजा विक्रमादित्य के नगर से।'' राजा विक्रमादित्य ने बात बनाते हुए कहा, ''पहले उनकी सेना में ही सिपाही था। वहाँ के काम से मन ऊब गया, सो घूमने निकल पड़ा। क्या आपके यहाँ मुझे कोई काम मिल सकता है?''

''क्या काम करोगे?''

''जो काम कोई नहीं कर सकेगा, वह काम मैं करूँगा।''

''तनख्वाह कितनी लोगे?''

''एक लाख रुपये रोज।''

''लाख रुपये रोज?'' सेठ ताज्जुब से बोल उठा, ''राजा विक्रमादित्य के यहाँ तो तुम केवल एक सिपाही ही थे। इतनी बड़ी तनख्वाह तुम्हें कौन देगा? यह तो बहुत है, भाई!''

''लेकिन मैं इतने से कम पर काम नहीं करूँगा।'' राजा विक्रमादित्य ने कहा, ''वहाँ मेरी किसी ने कदर नहीं की, इसीलिए तो मैं वहाँ से छोड़कर आया हूँ, और फिर सोचो जरा, काम भी तो मैं ऐसा करता हूँ जिसे दूसरा कोई न कर सके!''

''हूँ!'' सेठ सोचता रहा... सोचता रहा... एकाएक बोल पड़ा, ''ठीक है, मुझे मंजूर है। मैं तुम्हें एक लाख रुपये रोज दूँगा। मेरे यहाँ तुम्हारी नौकरी पक्की हो गई।''

बस, राजा विक्रमादित्य उसी दिन से सेठ के यहाँ नौकर हो गया। काम-धाम के नाम पर तो उसे कुछ करना नहीं होता था—दिन-भर बस बैठा रहता और साँझ को सेठ से एक लाख रुपये गिनवा लेता।

राजा विक्रमादित्य रोज सेठ से एक लाख रुपये लेकर आधा तो गरीब दुखियों को दान कर देता। आधे का आधा करके मंदिर में जाकर देवी-देवताओं को चढ़ा देता। फिर जो आधा बचता, उसमें से आधा बुरे समय के लिए संभालकर रख लेता और शेष रुपयों से ठाठ से अपना खर्च चलाया करता।

इसी तरह दिन बीतते गए।

एक बार की बात है कि सेठ को दूसरे देशों में व्यापार करने के लिए बाहर निकलना पड़ा। उसने बड़े-बड़े जहाजों में खूब माल खरीदकर लदवाया और समुद्र के रास्ते से किसी दूसरे देश की ओर चल पड़ा। चलते समय उसने विक्रमादित्य को भी अपने साथ ले लिया।

दुर्भाग्य की बात, जहाज बीच समुद्र में पहुँचा ही था कि एकाएक अटक गया। मल्लाहों ने बड़ी हिम्मत की, बड़ा जोर लगाया, पर जहाज न अंगुल भर आगे सरका, न पीछे खिसका। अब तो सेठ भी बहुत घबराया। उसने राजा विक्रमादित्य की ओर देखकर कहा, ''भाई, मैं तुम्हें रोज एक लाख रुपये तनख्वाह

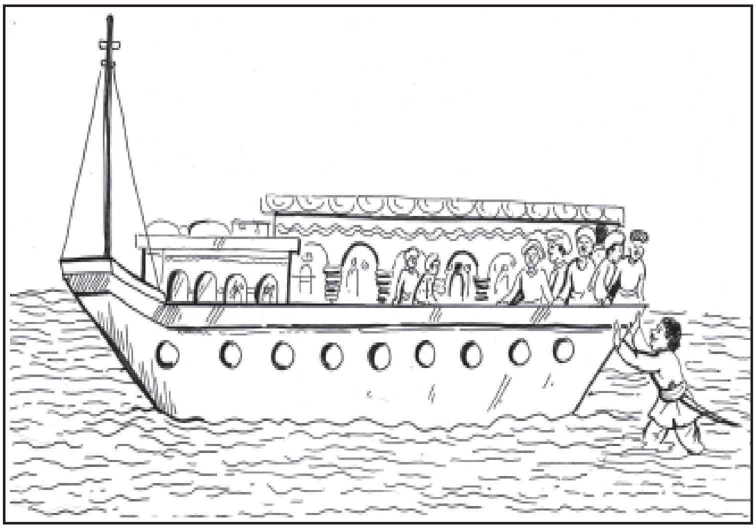

के देता हूँ। तुम्हीं ने तो कहा था कि जो काम कोई नहीं कर सकेगा, उसे तुम करोगे। जरा देखो तो, समुद्र के बीच में आकर यह जहाज न जाने कैसे एकाएक अटक गया है और कोई भी इसे हिलाने तक में समर्थ नहीं है। अब तुम्हीं इसे किसी तरह यहाँ से आगे खिसकाओ।''

हुक्म पाते ही राजा विक्रमादित्य तैयार हो गया। उसने पानी में उतरकर अपनी पूरी ताकत से जहाज को जोर से धक्का मारा। धक्का इतना तेज लगा था कि पूरा जहाज हिलकर अपनी जगह से न केवल सरक गया बल्कि दूर निकल गया। राजा जहाँ का तहाँ रह गया।

सेठ जहाज लेकर चला गया। राजा ने सेठ की काफी प्रतीक्षा की, किन्तु जब सेठ वापस नहीं लौटा तो राजा विक्रमादित्य अपने नगर में जा पहुँचा।

वह अपने दरबार में आकर राजसिंहासन पर बैठा ही था कि भाग्य और साहस भी आ धमके।

भाग्य ने छूटते ही कहा, ''राजन्, आज छ: महीने पूरे हो गए। अब हमारा फैसला कर दो।''

साहस ने भी कहा, ''हाँ राजन्, अब तुम हमें बता ही दो कि साहस बड़ा है या भाग्य?''

''न कोई बड़ा है, न कोई छोटा...'' राजा विक्रमादित्य ने कहा, ''दोनों ही बराबर हैं।''

भाग्य और साहस चौंक पड़े, अरे! ''यह कैसे हो सकता है, राजन्।''

राजा विक्रमादित्य ने अपनी पूरी कथा सुनाकर फैसला देते हुए कहा, ''भाग्य देवता ने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की थी। मुझे सेठ ने भाग्य के कारण ही प्रतिदिन एक लाख वेतन पर नौकरी दी किन्तु जब जहाज बीच समुद्र में पहुँचा और अटक गया तथा मल्लाहों के धक्का देने पर भी नहीं चला; तब मैंने साहस के साथ धक्का देने का प्रयास किया तो मुझे सफलता मिली।''

इसीलिए मैं कहता हूँ कि—अगर साहस न हो तो भाग्य भी साथ नहीं देता और भाग्य न हो तो साहस बेकार है। आप दोनों ही समान हैं।

राजा विक्रमादित्य का फैसला भाग्य ने भी मान लिया और साहस ने भी। फिर उन दोनों में कभी झगड़ा नहीं हुआ। वे अब बड़े प्रेम से एक-दूसरे का साथ देते हैं।

शब्दार्थ

अपार=जिसका पार न हो। **बहस**=वाद विवाद। **फैसला**=निर्णय। **प्रतापी**=वीर, जिसके पराक्रम की प्रसिद्धि दूर-दूर तक हो। **स्तुति**=प्रशंसा। **तनख्वाह**=वेतन।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**

- देवी - कीर्ति
- राज - घोड़े
- यश - धाम
- हाथी - पाट
- काम - देवता

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

- विक्रमादित्य........... राजा था। (दानी/कंजूस)
- विक्रमादित्य में .... से भी जूझ पड़ने का साहस था। (इन्द्र/यमराज)
- सेठ ने राजा को.......... रुपये प्रतिदिन पर नौकर रख लिया। (एक हजार/एक लाख)
- आप लोगों के दर्शन पाकर मैं......... हो गया। (धन्य/पानी-पानी)
- सेठ को दूसरे देशों में .... करने के लिए बाहर निकलना पड़ गया। (युद्ध/व्यापार)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए—**

(क) भाग्य और साहस में किस बात पर झगड़ा हुआ?
(ख) भाग्य और साहस निर्णय के लिए किसके पास गए?
(ग) राजा विक्रमादित्य में क्या-क्या गुण थे?
(घ) राजा ने सेठ से क्या काम माँगा?
(ङ) भाग्य के कारण राजा के पास क्या-क्या था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए—**

(क) साहस ने अपने को किस तरह बड़ा सिद्ध किया?
(ख) भाग्य ने अपने को क्यों बड़ा कहा?
(ग) राजा एक लाख रुपये किस प्रकार खर्च करता था?
(घ) राजा ने भाग्य और साहस में से किसको बड़ा बताया और क्यों?
(ङ) राजा ने अपना फैसला सुनाने के लिए कितना समय माँगा और क्यों?

भाषा की बात

4. **निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए—**
विक्रमादित्य, पृथ्वी, धर्मात्मा, स्तुति, प्रसन्न, स्वागत-सत्कार, सत्यवादी, न्यायी, तनख्वाह।

5. **निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—**
आग्या, कीरति, राज्यपाट, स्तुती, दरशन, सुवागत, फेसला, परिक्षा, तंदरुस्त।

निम्नलिखित शब्दों को ध्यान पूर्वक पढ़िए और सोचिए—
आदमी, दरबार, मतलब, मिसाल, दलील, हौसला, फैसला, तंदुरुस्त, ताज्जुब, तनख्वाह, कदर, फैसला, आखिर।
ये शब्द हिन्दी भाषा में अरबी, फारसी भाषाओं से आए हैं। इसी तरह रेल, फोन, स्कूल, टेलीविजन, डॉक्टर आदि शब्द अंग्रेजी भाषा से आए हैं। इस प्रकार के शब्दों को आगत अथवा विदेशी शब्द कहते हैं।

6. **हिन्दी भाषा में प्रचलित अन्य भाषाओं के दस शब्द लिखिए—**

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और समझिए—

''भगवान वामन ने विराट रूप धारण कर लिया। उन्होंने पहले पग में पूरी धरती और दूसरे पग में पूरा आकाश नाप लिया। तीसरे पग के लिए वामन ने और स्थान माँगा, तब राजा बलि ने अपनी पीठ को ही वामन के लिए प्रस्तुत कर दिया। भगवान वामन बलि की दानशीलता से बड़े प्रभावित हुए।''

उपर्युक्त गद्यांश में रेखांकित शब्द ने 'में', 'के लिए', 'ने' को, की 'से' किसी न किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ अन्य पदों से सम्बन्ध बता रहे हैं।

यदि इन वाक्यों में से ये रेखांकित शब्द हटा दिए जाएँ तो पढ़ने पर वाक्यों का कोई भी आशय स्पष्ट नहीं होता है।

जैसे—भगवान वामन विराट रूप धारण कर लिया। इस वाक्य में 'ने' शब्द के नहीं होने से आशय स्पष्ट होने में कठिनाई होती है।

निम्नलिखित तालिका में संज्ञा शब्दों के साथ रेखांकित शब्दों के मेल को दिखाया है। रेखांकित शब्दों का स्वयं कोई अर्थ नहीं होता, लेकिन वे संज्ञा या सर्वनाम से अन्य पदों का सम्बन्ध स्थापित कर आशय स्पष्ट कर देते हैं।

क्र.	संज्ञा/सर्वनाम	रेखांकित शब्द
1.	वामन	ने
2.	पग	में
3.	राज बलि	ने
4.	पीठ	को
5.	वामन	के लिए
6.	बलि	की
7.	दानशीलता	से (के द्वारा)

यदि प्रश्न किया जाए कि विराट रूप किसने धारण किया? तो उत्तर स्पष्ट नहीं होगा। बिना 'ने' के यह उत्तर देना संभव नहीं होगा कि वामन ने विराट रूप धारण कर लिया।

अत: ''वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम से जुड़कर वाक्यों का अर्थ प्रकट करने में सहयोग करते हैं, 'कारक' कहलाते हैं और ये कारक जिन चिह्नों की सहायता से शब्दों में सम्बन्ध जोड़ते हैं, उन्हें कारक चिह्न (परसर्ग) कहते हैं।''

हिन्दी में कारक के निम्नलिखित आठ भेद हैं—

क्र.	कारक	कारक चिह्न (परसर्ग)
1.	कर्ता कारक (कार्य करने वाला)	'ने'
2.	कर्म कारक (क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़े)	'को'
3.	करण कारक (जिसकी सहायता से क्रिया की जावे या कार्य करने का साधन)	'से', 'के द्वारा'
4.	सम्प्रदान कारक (जिसके लिए कार्य किया जाए)	'को', 'के लिए'
5.	अपादान कारक (अलग होने का भाव)	'से'
6.	सम्बन्ध कारक (सम्बन्ध बताना)	'का', 'की', 'के'
7.	अधिकरण कारक (आधार का बोध)	'में', 'पर'
8.	सम्बोधन कारक (संकेत करने का भाव)	'हे', 'हो', 'अरे'

8. कोष्ठक में लिखे कारक चिह्नों का रिक्त स्थान में सही प्रयोग कीजिए—

(ने, के, को, में, से, के लिए)

(क) श्रीराम राजा दशरथ .... पुत्र थे।

(ख) सैनिक शत्रु .... लड़ता है।

(ग) शिक्षिका .... छात्र .... पाठ पढ़ाया।

(घ) बच्चा आम .... रो रहा है।

(ङ) पिताजी घर .... है।

9. निम्नलिखित कारक चिह्नों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए—

(क) से (के द्वारा) ....

(ख) से (अलग, पृथकता) ....

(ग) के लिए ....

(घ) हे! ....

(ङ) में, पर ....

अब करने की बारी

- पुस्तकालय की पुस्तकों से या आसपास से ऐसे महापुरुषों या राजा-महाराजाओं की कहानियों को पढ़िए तथा उनका संकलन कीजिए जिन्होंने अपने साहस के कारण प्रसिद्धि प्राप्त की हो।
- क्या आपके गाँव या शहर के किसी व्यक्ति ने अपने साहस के कारण सफलता प्राप्त की है? उसके बारे में जानने का प्रयास कीजिए।
- वीरता, साहस, पराक्रम आदि के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार प्राप्त बालकों की जानकारी तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों को अपने शिक्षक से जानिए।

❑❑